International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

लोककथाओं में हरियाणा का परिचय

शिव कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग
म.द.वि., रोहतक।

सारांश :

हरियाणा प्राचीन काल से ही धन–धान्य से परिपूर्ण प्रदेश रहा है। परन्तु इसका सही नामकरण न होने के कारण विभिन्न ग्रन्थों में इसे भिन्न–भिन्न नामों से सम्बोधित किया गया है। यहां की भाषा और संस्कृति एवं लोक धाराओं के आधार पर भी इसका विभाजन किया गया है।

मुख्य शब्द : *सीमावर्ती, हरियानी, कुरुवन, हिलोसीन, खादर, बलिष्ठ, पारगम्यता, ग्रथिया, आरण्यक, आभरयाण, क्रीड़ा, शिलालेख*

प्रस्तावना

वर्तमान हरियाणा प्रदेश राजनीतिक इकाई के रूप में संयुक्त पंजाब के 35.18 प्रतिशत भू–भाग पर 1 नवम्बर 1966 को अस्तित्व में आया। परन्तु इसकी प्राकृतिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अति प्राचीनकाल (सैंधव व वैदिक काल) में उल्लिखित सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों के मध्य स्थित भू–भाग बह्मवर्त के नाम से प्रसिद्ध था। हरियाणा शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद (6/2, 25/2) में रज हरियाणे के रूप में हुआ है।[1] हरियाणा शब्द का उल्लेख दिल्ली संग्रहालय में सुरक्षित 1328 ई. के शिलालेख में इस भू–भाग को पृथ्वी पर स्वर्ग के समान तथा तोमरों द्वारा बसाई गई दिल्ली, इस क्षेत्र का एक भाग था।[2] गिरीशचन्द्र अवस्थी ने हरियाणेनित्यकाल मेवाभिप्रस्थितमान, कहकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि जिस राजा का सदैव रथ चलता था, इसके उस रथ का नाम हरियाणा पड़ गया। कालान्तर में हरयाणा राजा के नाम हरयाणा जो बाद में हरियाणा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।[3] हरियाणा के अभिलेखागार विभाग के पास मौजूद पुराने नक्शे एवं दस्तावेजों के अनुसार उत्तर–पूर्व में यमुना नदी, उत्तर–पश्चिम में घग्घर घाटी और दक्षिण में सतलुज नदी के बीच का क्षेत्र को हुडियाना क्षेत्र कहा जाता था। इसके दक्षिण–पश्चिम में बागड़ और पूर्व में नर्दक क्षेत्र पड़ता था। तीन हजार मील के इस उपजाऊ क्षेत्र के अन्तर्गत केवल रतिया, टोहाना, फतेहाबाद, अग्रोहा, अम्बाला, हांसी, हिसार, सिवानी व तोशाम आदि

शहर और हजारों गाँव आते थे। हुडियाना उस समय पंजाब का एक जिला हुआ करता था। यही हुडियाना बाद में बदलकर हरियाणा बन गया।[4] दिल्ली के पालम गांव की एक बावड़ी से सम्वत् 1337 ई. का यानि उपरोक्त शिलालेख से 47 वर्ष पुराना एक शिलालेख मिला है, बलबनकालीन इस शिलालेख में हरियाणा के लिए हरिनायक शब्द का प्रयोग हुआ है।[5] जिला हिसार की बन्दोबस्त रिपोर्ट 1863 में पं. धरनीघर हांसी वाले की रचना 'अखण्ड प्रकाश' का निर्देश देकर हरियाणक को हरियाणा का पर्याय दर्शाया गया है।[6] वासुदेव अग्रवाल, डॉ. बुद्ध प्रकाश तथा कृष्णचन्द्र यादव ने हरियाणा का प्रार्दूभाव आभरियाण शब्द से होना स्वीकार किया है, जिसका अर्थ आभीरो यानि अहीरों की बस्ति है।[7] एक मत के अनुसार हरियाणा प्रदेश प्राक्काल में हरियाली एवं धन धान्य से परिपूर्ण रहा है। इसलिए इसका नाम हरि–धान्यक और बहु–धान्यक भी रहा है। हरि–धान्यक का अर्थ है हरितिमा एवं धन–धान्य से भरा हुआ तथा बहु–धान्य का अर्थ है अत्यधिक धन–धान्य वाला। इस आधार पर पं. राहुल सांकृत्यायन ने कहा है कि हरि–धान्यक शब्द अपभ्रंशित होकर हरिधनक–हरिआनक–हरिआनन–हरियान–हरियाना और हरियाणा बना।[8] हरियाणा का उदय दो शब्दों के मेल से हुआ हरि का अरण्य भगवान श्रीकृष्ण की क्रीड़ा स्थली, हर का अयन यानी भगवान शिव का घर और हरित अरण्य अर्थात हरा भरा वन आदि।[9] जदुनाथ सरकार का मत है कि इस प्रदेश का यहां की हरियाली से संबंधित है या उचित लगता है क्योंकि इस प्रदेश में ऐसी विचित्र वनस्पतियां उगती हैं जो पहली बार वर्षा होते ही तीन–चार दिनों में सारे प्रदेश को एक 'हरित आरण्यक' का स्वरूप प्रदान कर देती है। सम्भवतः इसी गुण के कारण पूर्व मध्यकाल में इस प्रदेश का नाम हरियाला, हरित–आरण्यक अथवा हरियाणा पड़ा। निष्कर्षतः यह माना जा सकता है कि इस प्रदेश की धरती उपजाऊ रही है। इसलिए इसे हरियाणा कहा गया है।[10] लोकधाराओं के आधार पर हरियाणा प्रदेश के समस्त भू–भाग को बांगर, नर्दक, खादर, बागड़, अहीरवाटी, मेवात और ब्रज आदि उपखण्डों में बांटा गया है।

बागर – बागर क्षेत्र में सम्पूर्ण भिवानी, जींद, सोनीपत, हिसार की हांसी तहसील, रोहतक जिले के नाहड विकास खण्ड या उपतहसीलों को छोड़कर तथा कुरुक्षेत्र जिले की केवल कैथल तहसील को बागर भू–भाग में रखा गया है। भौगोलिक स्थिति के अनुसार यहां की धरती कहीं–कहीं पर समतल तथा कहीं–कहीं प्लेट की भांति है। जहां थोडी सी

वर्षा होने पर ही बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।[11] यहां के लोग कद–काठी में मजबूत व सुन्दर हैं, जो शाकाहरी हैं, इन्होंने इतिहास के हर मोड़ पर अपनी वीरता का लोहा मनवाया है।[12] इस प्रदेश के विषय में शिव कुमार खण्डेलवाल का विचार है कि प्रदेश की अधिकतम भूमि ऊंची–नीची व शुष्क होने के कारण बागर कहलाती है और यहां की बोली बागरू है।[13] राज्य में इस पुरातन क्षेत्र का विस्तार सबसे अधिक है क्योंकि प्रचीन व वर्तमान नदियों ने अपने–अपने बाढ़ के मैदानों का निर्माण किया, इनकी सामग्री अपेक्षाकृत काले रंग की है।

बागड़ – यह प्रदेश उच्च भागों में शिवालिक के बाहरी सीमान्तों के साथ–साथ नदियों द्वारा निक्षेपित बाढ़ों तथा चीका व चूना युक्त ग्रंथिया इनकी रचना करती है। यह गिरीपदीय क्षेत्र है जो संकीर्ण पट्टी में पाया जाता है। इन निक्षपों की पारगम्यता अपेक्षाकृत अधिक होती है, क्योंकि इनकी रचना रेत, बजरी तथा मोटी सामग्री से होती है।[14] हरियाणा में इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण सिरसा, महेन्द्रगढ़, भिवानी व हिसार जनपद का कुछ दक्षिणी क्षेत्र बागड़ में आता है। यहां कहीं–कहीं पर रेत के टीले तो कहीं–कहीं पर छोटी–छोटी पहाड़िया हैं जो अरावली पर्वत श्रेणी का ही एक अंग है।[15] खेती के लिए ज्यादातर वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है। वर्तमान समय में इस क्षेत्र में भी सिंचाई के साधन उपलब्ध हो गए हैं। लोग सुन्दर व बलिष्ठ शरीर के धनी हैं तथा सैनिक सेवाओं में लगे हुए हैं।[16] शंकर लाल यादव के अनुसार, "हिसार जिले के पश्चिमोत्तर भाग में बागड़ी बोली जाती है, बागड़ी भी राजस्थानी की एक उपबोली मानी जाती है। हिसार जिले की उस सीमा पर जहां से बीकानेर का क्षेत्र आरम्भ होता है, विशुद्ध बागड़ी सुनने को मिलती है, किन्तु वहां से हम ज्यों–ज्यों हिसार की तरफ आते हैं बागड़ी–बागरू से प्रभावित हो जाती है।'[17]

खादर – ये ऐसे बाढ़कृत क्षेत्र हैं जिनकी संरचना प्लीस्टोसीन से अभीवन काल (हिलोसीन) के मध्य हुई है। जो नए बाढ़ के मैदान हैं। जिनमें अधिकांश सामग्री शिल्ट व चीका की है और थोड़ी मात्रा में रेत का भी अवशेष है।[18] हरियाणा की पूर्वी सीमा पर यह सबसे छोटा क्षेत्र जमना खादर के नाम से प्रसिद्ध है अर्थात् यमुना नदी के साथ वाले खाद्र कहते हैं जिसमें सोनीपत, करनाल तथा अम्बाला के पूर्वी क्षेत्रों के भू–भाग को शामिल किया गया है। यहां की भूमि उपजाऊ व लोग परिश्रमी हैं। शंकर लाल यादव के

अनुसार, "हरियानी की पूर्वी सीमा पर जमना के उस पार कुरुवन प्रदेश में कौरवी बोली जाती है। जमना के खादर में कौरवी और हरियानी का मिश्रित रूप मिलता है।"[19]

अहीरवाटी – हरियाणा प्रदेश के रोहतक जनपद का नाहड क्षेत्र महेन्द्रगढ़ जनपद का नारनौल, रिवाड़ी और महेन्द्रगढ़ तहसील, गुडगांव जनपद की गुड़गांव तहसील का कुछ क्षेत्र अहीरवाटी कहलाता है।[20] इस क्षेत्र की अधिकतर जनसंख्या अहीर जाति की है जो अपने–आपको भगवन श्रीकृष्ण का यादव वंशी मानते हैं। यदि इस जाति का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया जाए तो वास्तव में इस जाति में युग पुरुष भगवान श्रीकृष्ण का बल और शौर्य, दूरदर्शिता और कर्मठता झलकती है। शिव कुमार खण्डेलवाल के अनुसार अहीरवाटी का क्षेत्र महेन्द्रगढ़ जिला, गुड़गांव जिला की गुड़गांव, बल्लभगढ़ और पलवल तहसीलें तथा झज्जर जिले का दक्षिणी भाग है। इसके पूर्व दिशा में ब्रज से और पश्चिम से राजस्थानी से प्रभावित हैं। किन्तु भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से इनका व्यक्तित्व हरियाणवी ही अधिक है।

मेवात – हरियाणा प्रदेश के गुड़गांव जनपद की फिरोजपुर झिरका तथा नूह तहसील, राजस्थान का भरतपुर तथा अलवर के सीमावर्ती क्षेत्र मेवात क्षेत्र के नाम से जाने जाते हैं। इस क्षेत्र में मेव जाति के लोग निवास करते हैं। इस कारण इसका नाम मेवात पड़ा। देवी शंकर प्रभाकर के अनुसार, 'मेवात एक उपजाऊ और रमणीय घाटी में बसा होने के कारण इसका अपना महत्व है, दो पर्वतीय श्रेणियों के बीचों–बीच लडोला नाला बनता है, जो घाटी की समतल भूमि की सिंचाई के लिए बड़ा उपयोगी है।'[21]

ब्रज – फरीदाबाद जिले के होडल और पलवल तहसीले ब्रज कहलाती हैं। यहां की धरती समतल और उपजाऊ है। मथुरा के क्षेत्र से सटा होने के कारण यहां के लोगों की भाषा, रहन–सहन, खान–पान आदि ब्रज क्षेत्र से मिलता जुलता है।'[22]

उपसहांर :

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हरियाणा प्राचीन काल से ही धन–धान्य से परिपूर्ण प्रदेश रहा है। उत्तर–पूर्व में यमुना नदी, उत्तर–पश्चिम में घग्घर घाटी और दक्षिण में सतलुज नदी के बीच बसे क्षेत्र को भाषा और संस्कृति एवं लोक धाराओं के आधार पर भी इसका विभाजन किया गया है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

सन्दर्भ ग्रन्थ :

[1] के.के. खण्डेलवाल, हरियाणा एन्साक्लोपीडिया, भूगोल खण्ड, भाग–2, पृ. 13
[2] सी.पी. गुप्ता, हरियाणा प्रगति के पथ पर, पृ. 1
[3] सन्तराम देसवाल, हरियाणा, संस्कृति एवं कला, पृ. 2
[4] वही, पृ. 2
[5] सन्तरात देसवाल, हरियाणा संस्कृति एवं कला, पृ. 3
[6] शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ. 54
[7] रेखा शर्मा, हरियाणा के लोग–गीतों में भक्ति भावना, पृ. 5
[8] शंकरलाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ. 59
[9] के.के. खण्डेलवाल, हरियाणा एन्साइक्लोपीडिया, इतिहास भाग–2, पृ. 1
[10] के.सी. यादव, हरियाणा, इतिहास एवं संस्कृति, भाग–1, पृ. 9
[11] हरिशरण वर्मा, हरियाणवी संस्कार, गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पृ. 4
[12] सन्तराम देसवाल, हरियाणा संस्कृति एवं कला, पृ. 15–16
[13] हरिशरण वर्मा, पूर्व उद्धृत, पृ. 4
[14] के.के. खण्डेलवाल, हरियाणा एन्साइक्लोपीडिया, भूगोल भाग–2, पृ. 29
[15] हरिशरण वर्मा, पूर्व उद्धृत, पृ. 5
[16] सन्तराम देसवाल, पूर्व उद्धृत, पृ. 5
[17] हरिशण वर्मा, पूर्व उद्धृत, पृ. 5
[18] के.के. खण्डेलवाल, पूर्व उद्धृत, पृ. 23
[19] हरिशरण वर्मा, पूर्व उद्धृत, पृ. 5
[20] सन्तराम देसवाल, पूर्व उद्धृत, पृ. 16
[21] हरिशरण वर्मा, पूर्व उद्धृत, पृ. 6–7
[22] सन्तराम देशवाल, पूर्व उद्धृत, पृ. 16–17